LEPROSY

कुष्ठरोग

01619
1619

कुष्ठरोग

विश्व में कुष्ठरोग की सर्वाधिक दर रखने वाले देशों में भारत भी है।

विश्व भर के कुष्ठरोगियों का 1/3 हिस्सा भारत में है।

कुष्ठरोग क्षयरोग के समान होता है। दोनों ही संक्रमक रोग हैं। इन दोनों बीमारियों को फैलाने वाले कीटाणु भी समान होते हैं। ये कीटाणु अम्लीय, दण्डाकार होते हैं।

कुष्ठरोग के कीटाणु शरीर की नसों व त्वचा को प्रभावित करते हैं। क्षयरोग के कीटाणु फेफड़े, जिगर, गुर्दे, हड्डियों तथा मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं।

कुष्ठरोग अपंग बनाने तथा शारीरिक संरचना को कुरूप करने वाली बीमारी है। कुष्ठरोग से मृत्यु बहुत धीमे होती है।

01619
COMH 321

तीसरी दुनिया के देशों में कुष्ठरोग

यह अनुमान लगाया गया है कि आज पूरे विश्व में लगभग डेढ़ करोड़ लोग कुष्ठरोग से पीड़ित हैं। अधिकतर यह बीमारी तीसरी दुनिया के देशों में पायी जाती है जहां गरीबी बहुत अधिक है।

कुष्ठरोग निम्न स्थानों में अधिक पाया जाता है :

भारतीय उपमहाद्वीप
अफ्रीका
दक्षिण-पूर्वी एशिया जैसे बर्मा, मलेशिया, थाईलैण्ड, फिलिपिन्स, इन्डोनेशिया

गरीब देशों की वर्तमान परिस्थितियां जैसे कुपोषण, अत्यधिक भीड़ में रहने की स्थिति, शिक्षा का निम्न स्तर, जल-मल निकासी की खराब व्यवस्था, अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवाओं के कारण कुष्ठरोग, क्षयरोग तथा अन्य संक्रमक रोग पैदा होते हैं।

कुष्ठरोग और गरीबी

पिछड़े व गरीब देशों में कुष्ठरोग अधिक होता है। अत्यधिक भीड़भाड़ से कुष्ठरोग का सीधा सम्बन्ध है।

अधिक भीड़ वाले क्षेत्रों में रहने की परिस्थितियों से संक्रमक, छूत रोगों को फैलने में सहायता मिलती है।

कुपोषण, जो कि गरीबों में अधिक होता है, से रोग को रोकने की शक्ति कम हो जाती है।

इन कारणों से कुष्ठरोग गरीब देशों में सबसे ज्यादा होता है। सामान्यतः गरीब ही कुष्ठरोग के शिकार होते हैं जो कि कथित देश की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा होते हैं।

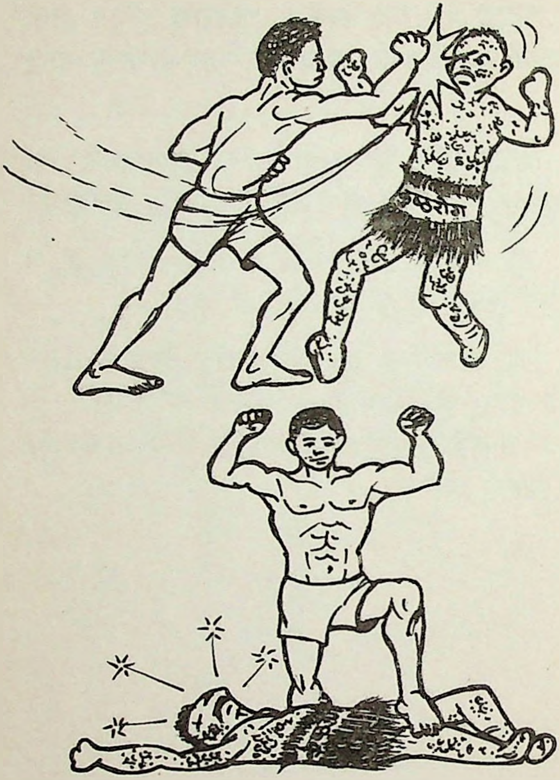

कुष्ठरोग की प्राकृतिक रोकथाम

कुष्ठरोग अच्छी तरह पोषित व्यक्तियों में बहुत कम पाया जाता है क्योंकि उनमें रोग से प्रतिरोध करने की शक्ति बहुत अधिक होती है।

यदि किसी अधिक प्रतिरोध वाले व्यक्ति के शरीर में कुस्ठरोग के कीटाणु प्रवेश कर जाते हैं तो निम्नलिखित घटनाएं हो सकती हैं :

1. शरीर का सुरक्षातंत्र सभी कीटाणुओं को नष्ट कर देगा जिससे कुष्ठरोग विकसित नहीं होगा।

2. रोग के कीटाणु तेजी से वृद्धि नहीं कर सकेंगे तथा शरीर में फैल नहीं सकेंगे और बिना इलाज के ही घाव तेजी से भर जाएंगे।

यदि कुपोषण या बीमारियों से लड़ने की शक्ति कम हो तो ये कीटाणु तेजी से वृद्धि करके शरीर के अन्य हिस्स में भी फैल जाएंगे।

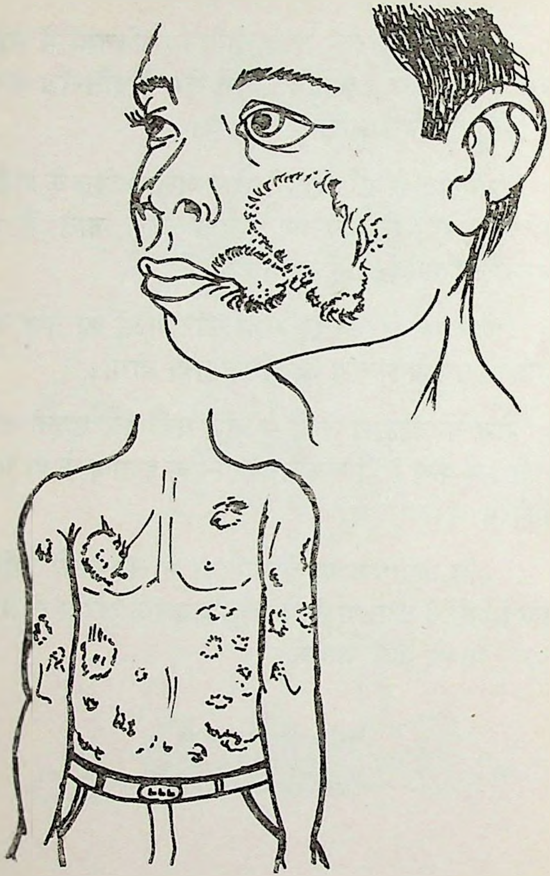

कुष्ठरोग के प्रारंभिक चिह्न तथा लक्षण

1. इसके सर्वाधिक सामान्य लक्षण त्वचा पर पीले या लाल धब्बों का दिखना है। विशेषकर चेहरे तथा कान के पास की त्वचा मोटी तथा सूजी हुई दिखाई देती है।

साधारण मरहमों का लेप करने से ये धब्बे समाप्त नहीं होते।

2. इस रोग से खास बात यह होती है कि त्वचा की संवेदन शक्ति समाप्त हो जाती है। यहां तक कि त्वचा में सुई की चुभन भी महसूस नहीं होती। कुष्ठरोग के धब्बों में खुजली नहीं होती।

3. त्वचा पर घाव हुए स्थान पर पसीना आना और बाल उगने समाप्त हो जाते हैं।

4. शरीर की मुख्य नसें रस्सी की तरह मोटी हो जाती हैं।

5. मांसपेशियां भी कमजोर हो सकती हैं तथा चेहरे, हाथ और पैर की मांसपेशियों को लकवा भी मार सकता है।

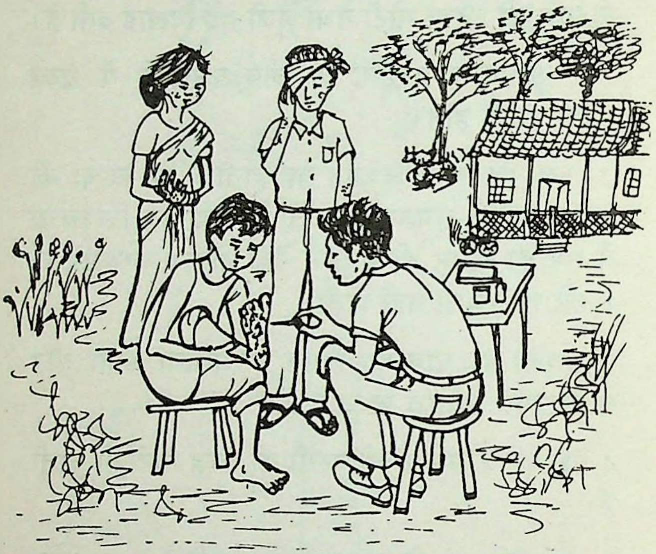

6. आंखें लाल होकर दर्द करने लगती हैं।

7. नाक में रुकावट होती है तथा खून बहने लगता है।

8. फोडा, घाव या जलन लगातार होते हैं जिन्हें रोगी त्वचा की संवेदनहीनता के कारण यह याद नहीं रख पाता कि ये कब शुरु हुए थे।

पैर में फोडे तथा उंगलियों में घाव सामान्य रूप से होते हैं।

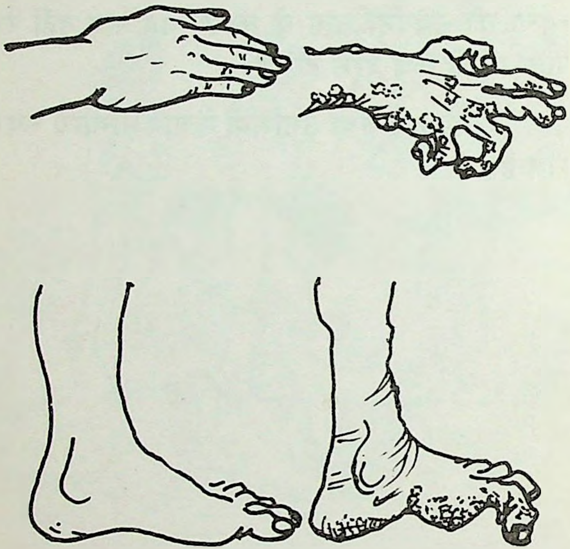

कुष्ठरोग के चरम लक्षण

1. भौहें तथा पलकें झड़ने लगते हैं।

2. पलकों की मांसपेशियों को लकवा मारे जाने के कारण पलकें बन्द होने या फड़फड़ाने में असमर्थ होती हैं।

3. पक्षियों की उंगलियों की तरह हाथ व पैर की उंगलियां मुड़ जाती हैं।

4. हाथ व पैर की उंगलियां कड़ी हो जाती हैं।

5. हाथ व पैर की उंगलियों के पोर कटे हुए दिखाई देते हैं।

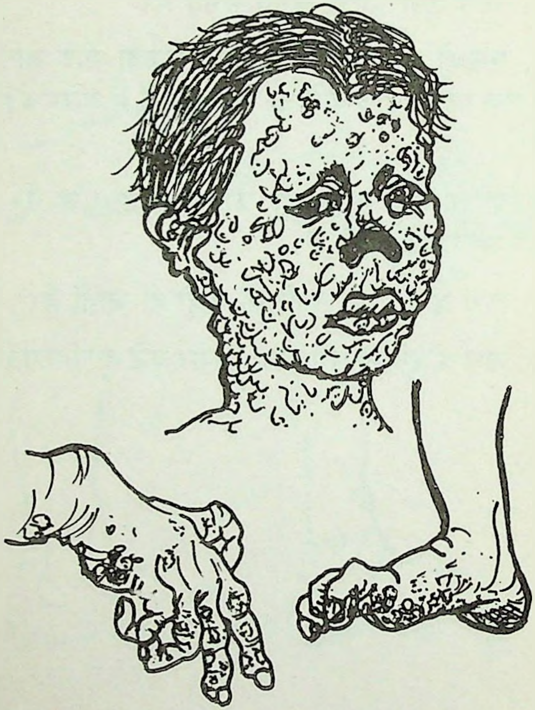

6. पसीने की कमी के कारण त्वचा सूखने लगती है तथा चमड़े की पर्त उतरने लगती है।

7. नाक का अगला भाग भीतर की ओर दब जाता है जिससे चेहरा बिना नाक-सा दिखाई देने लगता है।

8. अण्डकोष सिकुड़ जाते हैं।

9. नसों को लकवा मारने के कारण कलाई या पैर मुड़ जाते हैं।

कुष्ठरोग से अत्याधिक प्रभावित होने वाले आयु व लिंग वर्ग

100 में से 80 (80%) कुष्ठरोगी 15 से 64 वर्ष के आयु वर्ग के होते हैं जो कि व्यक्ति के जीवन के सर्वाधिक विकासशील वर्ष होते हैं। इससे यह बात साफ हो जाती है कि कुष्ठरोग किस प्रकार से देश के आर्थिक घाटे का जिम्मेदार है।

सामान्यतः महिलाओं की अपेक्षा पुरुष कुष्ठरोग से अधिक पीड़ित होते हैं।

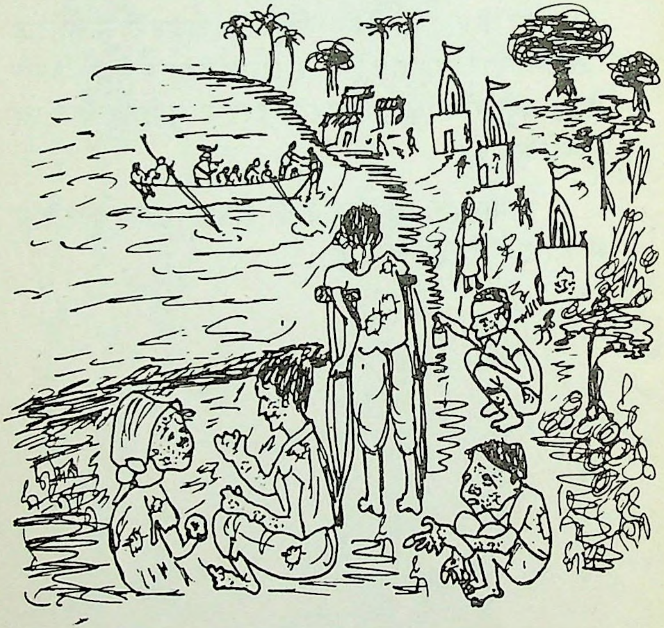

कुष्ठरोग : कुरुप तथा अपंग बनाने वाला रोग

मलेरिया, क्षयरोग, इन्फ्लुएंजा, चेचक, पेचिश आदि की तरह भयानक जानलेवा बीमारियों की अपेक्षा कुष्ठरोग से मृत्यु बहुत धीमे होती है।

कुष्ठरोग की समस्या का सामना करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि इससे शरीर अपंग हो जाता है। कुष्ठरोग का प्रभाव सामाजिक - आर्थिक धरातल पर भी होता है क्योंकि इससे शरीर में कुरुपता जाती है।

कुष्ठरोग अपंग करने वाली बीमारी है। इसका सामाजिक तथा मानसिक प्रभाव भी रोगी, उसके परिवार तथा समाज पर पड़ता है।

कुष्ठरोग समाज से बहिष्कृत होते हैं। कुरुपता से अधिक कष्टकर मानसिक प्रभाव होता है। यह रोग अत्यधिक पीड़ा व दुःख देता है।

कुष्ठरोग का भय

सैकड़ों वर्ष पहले कुष्ठरोग से इतना भय होता था कि रोगी अन्य लोगों को अपने से दूर रखने के लिए घंटी बजाते चलते थे।

बाद में इन रोगियों को आबादी से दूर निर्जन द्वीपों में अलग रखा जाता था।

आजकल इन कुष्ठरोगियों को विशिष्ट दवाखानों में अलग रखा जाता है जिन्हें कुष्ठगृह कहा जाता है।

रोगी के प्रति अमानवीय आचरण इस रोग के प्रति भय को बतलाता है।

सत्य यह है कि कुष्ठरोगियों को अलग रखने की आवश्यकता नहीं है। उनका इलाज प्रशिक्षित स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा उन्हीं के समुदाय में अच्छी तरह से किया जा सकता है।

CONH 321
01619

कुष्ठ कितना छूतरोग है?

कुष्ठरोग छूने से उतना फैलने वाला रोग नहीं है जितना कि लोग समझते हैं।

रोग से पीड़ित पति या पत्नी बहुत कम ही एक दूसरे से इसके शिकार होते हैं। सिर्फ एक-आध बच्चे को ही, जो कि इनके संपर्क में रहता है, यह बीमारी हो सकती है।

इस रोग के कीटाणु बहुत धीरे बढ़ते हैं। इनकी परिपक्वता का समय बहुत लम्बा (3 से 5 वर्ष) होता है। इस रोग का विकास बहुत धीमा होता है।

यदि प्रारंभ में ही इसका इलाज किया जाए तो कुष्ठरोग दूर किया जा सकता है। लेकिन इसके इलाज में समय अधिक लगता है।

कुष्ठरोग का फैलना

हम यह ठीक प्रकार से नहीं जानते कि कुष्ठरोग कैसे फैलता है। हम सिर्फ इतना ही जानते हैं कि यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति यानि एक कुष्ठरोगी से दूसरे स्वस्थ्य व्यक्ति में फ़ैलता है।

कुष्ठरोग एक धीमे प्रकार की छूत की बीमारी है जिसको फैलने के लिए निकट संपर्क की जरूरत होती है। यह माना जाता है कि रोगयुक्त त्वचा के सम्पर्क द्वारा ही यह रोग फैलता है।

जिस रोगी की नाक में घाव हो जाता है उसकी नाक द्वारा भी रोग के कीटाणु फैलते हैं। छींकने के कारण ये कीटाणु हवा में फैल जाते हैं।

कीटाणुयुक्त कीटों द्वारा काटे जाने से भी यह रोग फैलता है।

कुष्ठरोग से रोकथाम

1. जीवन के सामान्य स्तर को ऊंचा उठाना।
2. कुपोषण की समस्या सुलझाना।
3. अत्यधिक भीड़ वाले इलाके में रहने की समस्या सुलझाना।
4. जल-मल-निकासी की व्यवस्था को सुधारना।
5. सामुदायिक स्तर पर स्वास्थ्य सम्बन्धी शिक्षा के कार्यक्रम चलाना।
6. रोगियों को ढूंढ़ने-पहचानने के कार्यक्रम को उन्नत करना।
7. शीघ्र ही इलाज शुरु करना। गलत दवा के प्रयोग से रोकने के उपाय करना।

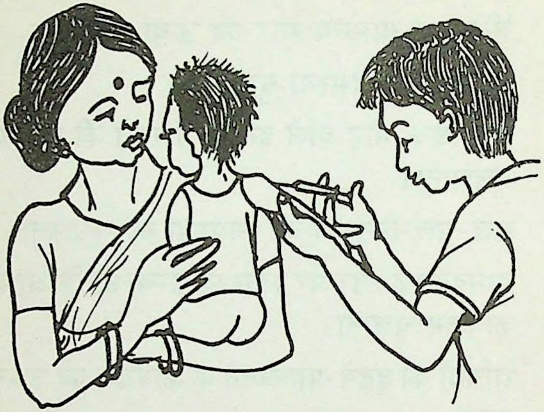

8. बच्चों को बी.सी.जी. के टीके देना। रोगियों के निकट सम्पर्क में रहने वाले बच्चों को प्रमुखता देना।

9. डैपसोन दवा से रोग की रोकथाम सिद्धांततः मान्य है लेकिन यह अव्यावहारिक व अनैच्छिक है। डैपसोन एक प्रबल जहरीली दवा है, खासकर जब उसका प्रयोग एक लम्बे समय तक किया जाता है।

10. जिन रोगियों को अधिक कुष्ठ हो जाता है उन्हें अलग रखने की सलाह नहीं दी जाती है। ऐसा करके रोगी को केवल छिपाया ही जाता है। इससे रोग को प्रारंभिक अवस्था में खोजने तथा इलाज करने के कार्य में बाधा ही आती है।

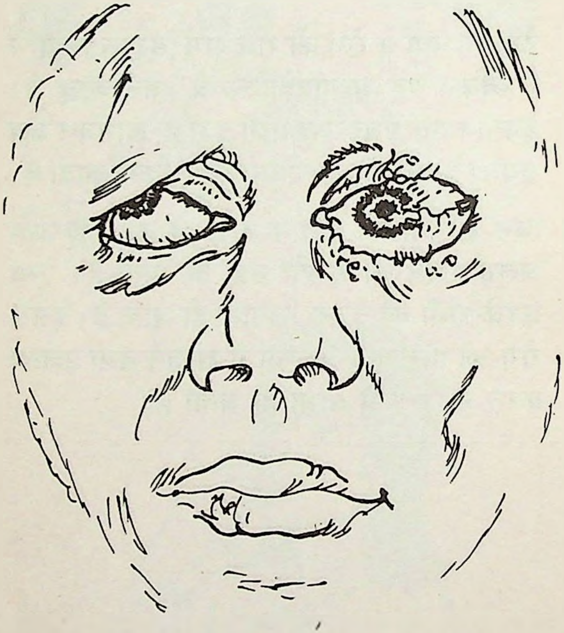

कुष्ठरोग में आंखों की स्थिति

कुष्ठरोग चेहरे की नसों को नुकसान पहुंचा सकता है, जिससे रोगी आंखें बंद नहीं कर पाता।

पलकों के न झपकने के कारण धूल व कचरा आसानी से आंखों में चला जा सकता है। इससे आंखें लाल व संक्रमित हो जाती हैं। आंखों में सूजन आ जाती है तथा उनमें फोड़ा भी हो सकता है। इससे रोगी अंधा भी हो सकता है।

आंखों की देखभाल

यदि सोते समय आंखें बंद न होती हों तो उन्हें साफ कपड़े से ढंकना चाहिए। इससे आंखों में धूल-कचरा नहीं जाएगा।

जिनकी पलकें नहीं झपकती हैं उन्हें धूप से बचने के लिए धूपरोधी (काले) चश्मे पहनने चाहिए या बडी टोपियां पहननी चाहिए।

सूखी आंखों के लिए प्रतिदिन साफ-शुद्ध तेल की कुछ बूंदें आंखों में डालनी चाहिए।

पानी से भरे टब में चेहरे को डुबाकर कुछ क्षणों के लिए आंखें खुली रखकर उन्हें समय-समय पर धोते रहना चाहिए। यह क्रिया बार-बार दोहरानी चाहिए।

आंखों को घाव से बचाना चाहिए क्योंकि इससे अंधे होने का डर रहता है।

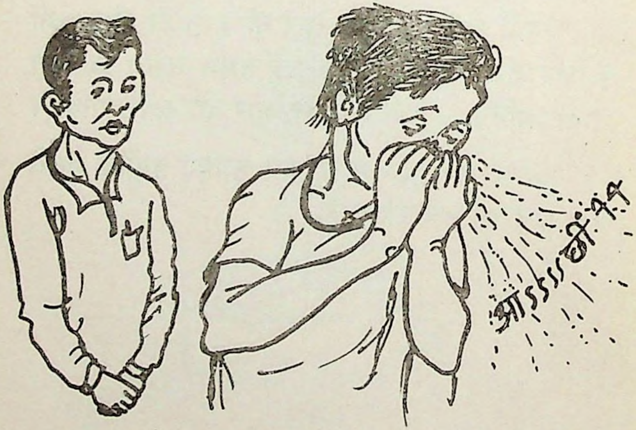

नाक की देखभाल

जिन कुष्ठरोगियों की नाक से खून बहता हो या श्लेष्मा से भरी होती हों या दुर्गन्ध आती हो, उन्हें प्रतिदिन सुबह हाथ में पानी लेकर (जिसमें थोड़ा-सा नमक मिला हो) उसे नाक द्वारा कई बार अन्दर खींचना चाहिए। ऐसा करने से नाक का भीतरी सूखा भाग नर्म होता है तथा नाक साफ रहती है। नाक में उंगली नहीं डालना चाहिए।

जब छींकना हो तब लोगों की ओर से चेहरा घुमा लेना चाहिए। नाक के श्लेष्मा को कपड़े, कागज या पत्ते पर छिनकना चाहिए जिसे बाद में जला देना चाहिए।

रोज रात में साफ तेल में डूबे कपड़े से कुछ बूंद तेल नाक में डालना चाहिए।

न करें

कीजिए

हाथों की देखभाल

हाथों को कटने या जलने से बचाना चाहिए। हाथों से कठोर काम कम से कम करना चाहिए।

गर्म या तेज धार की वस्तुओं से काम नहीं करना चाहिए। भोजन नहीं बनाना चाहिए। आग से दूर रहना चाहिए।

सिगरेट पीने के लिए सिगरेट-होल्डर का प्रयोग करना चाहिए जिससे जलते टोटे से हाथ नहीं जलता है। बढ़ईगिरी या सिलाई का काम नहीं करना चाहिए।

प्रतिदिन हाथों का निरिक्षण करना चाहिए। घावों को धोना चाहिए और दवा लगाकर उन्हें ढंक कर रखना चाहिए।

हाथों की रोज देखभाल करना आवश्यक है। हाथों को साबुन के पानी में रोज 30 मिनट तक डुबाए रखना चाहिए। इसके बाद तेल की मालिश करना चाहिए जिससे त्वचा नर्म बनी रहती है।

न करें

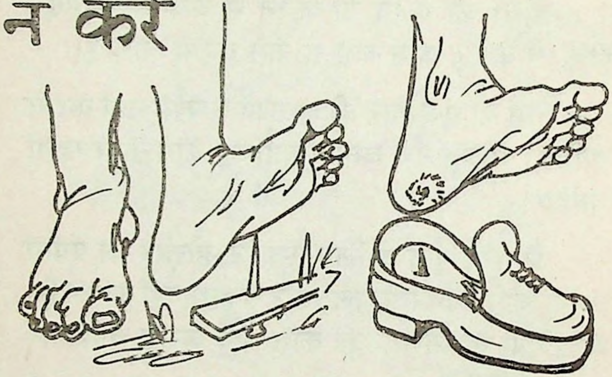

कीजिए

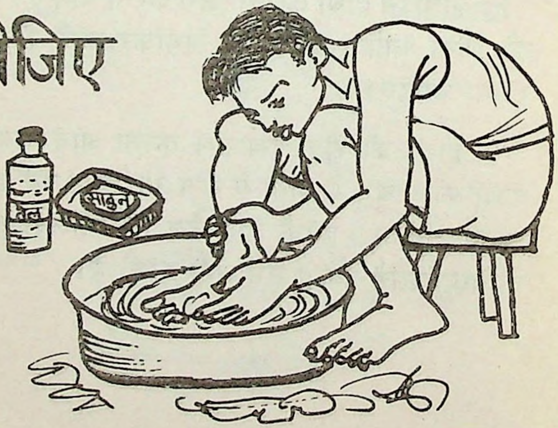

पैरों की देखभाल

कुष्ठरोगी के पैर दर्द को महसूस नहीं कर पाते, अतः उनके लिए निम्न सुझाव दिये जाते हैं :

जब घर से बाहर जाना हो तो जूते और घर में रबड़ की चप्पल पहनना चाहिए।

इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिंए कि जूते में कोई कीला न निकला हो।

तंग जूते नहीं पहनना चाहिए क्योंकि उससे पैर में छाले पड़ सकते हैं।

लंबी दूरी तक नहीं चलना चाहिए।

छोटे-छोटे कदम रखना चाहिए तथा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कदम कहां पड रहा है।

पैरों का निरिक्षण प्रतिदिन करना चाहिए। यह देखना चाहिए कि कहीं पैरों में कोई घाव, छाला या सूजन तो नहीं है। घावों की अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए। .

पैरों की रोज देखभाल करना आवश्यक है। पैरों को साबुन के पानी में 30 मिनट तक डुबाए रखना चाहिए। सूखने के बाद उनकी तेल से मालिश करनी चाहिए।

प्रश्न

1. कुष्ठरोग कैसे फैलता है?
2. उससे बचाव कैसे किया जा सकता है?
3. कुष्ठरोग और गरीबी के बीच क्या संबंध है?
4. क्या आप कुष्ठरोग के आरंभिक और चरम लक्षण पहचान सकते हैं?
5. कुष्ठरोग क्षयरोग से किन अर्थों में समान है? कष्ठरोग क्षयरोग से किन अर्थों में भिन्न है?

कुष्ठरोग के लिए जड़ी-बूटी की दवा

1. 20 ग्राम मेंहदी के पत्तों को रात भर पानी में भिगोएं। सुबह उन्हें अच्छी तरह मिलाकर छान लें। उस रस में थोड़ा-सा शहद मिलाकर पियें।
2. चलमोगरे' के तेल की पांच बूंदें प्रतिदिन पियें। 6 महिने से एक वर्ष तक इस खुराक को धीरे-धीरे बढ़ाएं। यही तेल घावों पर भी लगाएं।

कुष्ठरोग को शीघ्र पहचानिए।
कुष्ठरोग का इलाज शीघ्र कीजिए।

लोगों को उनके हाथ, पैर, आंख व नाक की सुरक्षा के लिए उन्हें कुष्ठरोग की जानकारी दीजिए।

इस श्रृंखला के शीर्षक

1. श्वासनली निमोनिया तथा निमोनिया
2. सामान्य आंत्र परजीवी
   (गोल-कृमि और सूचि-कृमि)
3. पोलियो, बाल पक्षाघात, पोलियोमैलिटिस
4. कान
5. आंखें
6. क्षयरोग तथा क्षयरोग की रोकथाम
7. दांत तथा मसूड़े
   दांतों की सामान्य देखभाल
8. कुष्ठरोग
9. त्वचा के सामान्य रोग
10. खुजली

Published by the Catholic Hospital Association of India,
157/6, Staff Road, Secunderabad-500 003